भारतीय संस्कृति में पर्यावरण संरक्षण

डॉ0 ऋतु,

असि0 प्रो0 समाजशास्त्र विभाग रा0स्ना0महावि0 गोपेश्वर चमोली उत्तराखण्ड

भारतीय वैदिक संस्कृति में पर्यावरण को विशिष्ट स्थान प्राप्त है। भारतीय दर्शन यह मानता है कि इस देह की रचना पर्यावरण के महत्वपूर्ण घटको–पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश से हुई है। संस्कृति का सामान्य अर्थ सीखे हुए व्यवहार से है। हम अपनी रीति–रिवाज, प्रथा, परम्पराएं, कानून, धर्म, दर्शन, कला, ज्ञान, विज्ञान आदि से जो कुछ भी सीखते हैं, वही संस्कृति है। संस्कृति एक पीढ़ी से नवीन पीढ़ी को हस्तान्तरित होती रहती है।

पर्यावरण शब्द का अर्थ हमारे चारों ओर का आवरण। हमारे चारों ओर का वातावरण जो हमें प्रभावित करता है, वह हमारा पर्यावरण है। पर्यावरण केवल वनस्पतियों और वायुमण्डल में उपस्थित गैसों को ही नहीं कहते। पर्यावरण में वे पांचों तत्व–पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश भी आते हैं, जिनसे यह प्रकृति बनी है ।

पर्यावरण संरक्षण का तात्पर्य है कि हम अपने चारों ओर के आवरण को संरक्षित करे तथा उसे अनुकूल बनाए। पर्यावरण के संरक्षण में संस्कृति ने अपना अमूल्य योगदान दिया है। भारतीय संस्कृति में अनेक ऐसे रीति–प्रथाएं प्रचलित है जिससे पर्यावरण को सुरक्षित किया जा सके। हमारी भारतीय संस्कृति पर्यावरण संवर्द्धन व संरक्षण करने वाली रही है। भारतीय संस्कृति पर्यावरण के साथ सामंजस्यपूर्ण जीना सिखाती है।

भारतीय संस्कृति में पर्यावरण के संरक्षण को बहुत महत्व दिया गया है। पर्यावरण संरक्षण का इतिहास बहुत पुराना है। हड़प्पा संस्कृति पर्यावरण से ओत –प्रोत थी, तो वैदिक संस्कृति पर्यावरण संरक्षण का पर्याय बनी। भारतीय मनीषियों ने सभी प्राकृतिक शक्तियों को देवता के समान माना है। यहां मानव जीवन को हमेशा मूर्त या अमूर्त रूप से पृथ्वी, जल, वायु, आकाश, सूर्य, चन्द्र, नदी, वृक्ष एवं पशु–पक्षी आदि के साहचर्य में ही देखा गया है। 'श्वेताश्वरोपनिषद में वृक्षों को ब्रहम के समान माना गया है।

' वृक्ष इव स्तब्धों दिवी तिष्ठत्येकः'।

संस्कृति को पर्यावरण से भिन्न नहीं किया जा सकता, पर्यावरण के बिना तो इसकी कल्पना तक नहीं की जा सकती है। पर्यावरण के बिना जीवन भी अधूरा है। भारतीय संस्कृति में धर्म, जल, वृक्ष, यज्ञ आदि के द्वारा पर्यावरण संरक्षित किया गया है। भारतीय संस्कृति और पर्यावरण में परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है। मनुष्य का अस्तित्व उसके परिवेश, पर्यावरण और प्रकृति से जुड़ा है। भारतीय संस्कृति वनों, तपोवनों में ही फली–फूली है, वनों तथा वृक्ष का हमारी संस्कृति से घनिष्ठ सम्बन्ध है। मनुस्मृति में उल्लेख मिलता है कि प्राचीन भारत में वृक्ष इतने महत्वपूर्ण समझे जाते थे कि उन्हें अवैध रूप से काटा जाना ''दण्डनीय अपराध'' माना गया। पीपल, बरगद, आम, नीम, जामुन, गूलर, अशोक, पदम, तुलसी बेल आदि वृक्षों को पूज्य मानकर उन्हें धार्मिक कृत्यों से जोडा गया है। इन वृक्षों को लगाना पुण्य कर्म तथा काटना पाप कर्म समझा जाता था। गीता में श्रीकृष्ण भगवान ने तो स्वयं को पीपल का वृक्ष बताया है।

''अश्वत्थः सर्व वृक्षाणा'' ।

'अर्थववेद' में पीपल के वृक्ष को देवसदन माना गया है।

''अश्वत्थः देवसदन'।

बौद्वमतावलम्बी पीपल की पूजा करते है, क्योंकि गौतम ने इसी वृक्ष की शीतल छाया में ''बुद्धत्व'' लाभ प्राप्त किया था। इसी कारण यह बोधि वृक्ष अर्थात ज्ञान का प्रकाश देने वाला वृक्ष है। जिसे काटना या उस पर कुल्हाड़ी का घाव करना पाप समझा जाता है, वृक्षों को इतना महत्व प्राप्त था कि उन्हें पुत्रवत समझा जाता था, इतना ही नहीं मत्स्य पुराण में एक वृक्ष को दस पुत्रों के बराबर माना गया है।

हिन्दू धर्म के अनुसार पीपल के वृक्ष में भगवान विष्णु का निवास माना गया है। और जनमानस में यहाँ धारण बनी रहती है कि पीपल के वृक्ष में पानी चढ़ाकर सभी कष्ट दूर हो जाते हैं। तुलसी के पौधों को भी पवित्र माना जाता है तथा प्रत्येक घर में तुलसी के वृक्ष लगाने की सलाह दी गई है। ऋषि मुनियों ने सभी को इस धारणों अपनाने पर बल दिया कि तुलसी में लक्ष्मी व विष्णु निवास करते हैं, तथा जिस घर–घर में तुलसी में होता है वहां सभी कार्य सफल होते हैं। दुर्वा को गणेश भगवान माना गया है।

हिन्दू धर्म में पर्यावरण संरक्षण को पर्याप्त महत्व दिया गया है हिन्दू धर्म की पुस्तकों में लिखा है कि कृष्ण भगवान को गोकुलवासियों को इन्द्र की पूजा करने की अपेक्षा गोवधर्न पर्वत की पूजा करने हेतु उदबोधित किया था। हिन्दू धर्म में गंगा, यमुना, सरस्वती आदि नदियों को सदैव से ही पूज्यनीय माना गया है। इनकी वंदना की गयी है। गंगा तो स्वयं से भारतीय संस्कृति की अविरल प्रवाहित धारा है, उसकी महिमा का गुणगान तो प्राचीनकाल से होता आ रहा है। ''गंगे! तब दर्शनात मुक्तिः।'' गंगा स्नान से न जाने अब तक कितने ही महापापियों का उद्धार हो चुका है । हिन्दू धर्म में यज्ञ आहुति को भी महत्वपूर्ण माना गया है यज्ञ आदि करने से भी प्राकृतिक पर्यावरण स्वच्छ रहता है।

भारतीय संस्कृति पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण तथा सकारात्मक भूमिका रखती है, मानव तथा प्रकृति के बीच अटूट रिश्ता कायम किया गया है जो पूर्णतः वैज्ञानिक तथा संतुलित है। हमारी संस्कृति में पेड़–पौधों, पुष्पों, पहाड़, झरने, पशु–पक्षियों, जंगली जानवरों, नदिया, सरोवन, वन, मिट्टी घाटियों यहां तक कि पत्थर भी पूज्य है और उनके प्रति स्नेह तथा सम्मान की बात बतलायी गयी है। बुद्धि जीवियों का यह चिन्तन पर्यावरण को प्रदूषण से मुक्त रखने के लिए सार्थक तथा संरक्षण के लिए बहुमूल्य है । पृथ्वी, अग्नि, वायु, वनस्पति, अन्तरिक्ष, आकाश आदि के प्रति असीम श्रद्धा प्रकट करने पर अत्यधिक बल दिया गया है। कल्याणकारी संकल्पना, शुद्ध आचरण, निर्मल वाणी एवं सुनिश्चित गति क्रमशः ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद की मूल विशेषताएं मानी जाती है और पर्यावरण संतुलन भी मुख्यतः इन्हीं गुणों पर आश्रित है। जंगल को हमारे ऋषि आनंददायक कहते है।

भारतीय विचारधारा में जीवन का विभाजन भी प्रकृति पर ही आधारित था। जीवन के चार आश्रमों में से तीन आश्रम वनों में ही व्यतीत होते थे, जहां व्यक्ति सदैव प्रकृति से ही जुड़ा रहता था। वानप्रस्थ आश्रम में व्यक्ति वनों में रहकर आत्मचिंतन तथा जन– कल्याण के कार्य करता था।

भारतीय समाज के अनेक राज्यों में आज भी अपनी संस्कृति को पूज्य तथा विश्वसनीय माना जाता है। हमारे भारतीय समाज में अनेक तीर्थ स्थानों को पवित्र तथा त्योहारों को मनाने की परम्परा आज भी विद्यमान है। जहां हर दिन, सप्ताह, महीना, साल, सांस्कृतिक मान्यताओं से ओत प्रोत है वहां सभी दिन तथा त्यौहार–तीर्थ प्राकृतिक संसाधनों से सम्बन्धित है ।

पर्यावरण को संरक्षित करना मानव का नैतिक दायित्व है। क्योंकि संरक्षण करना स्वयं को जीवन देना है । पर्यावरण की कोई भौगोलिक तथा राजनीतिक सीमा नही है। ।

मानव जीवन को अस्तित्व को संरक्षित रखने के लिये औषधि, उदर पूर्ति के लिये कन्दमूल फल, शरीर ढकने के लिये वस्त्र, कारखाने चलाने हेतु कच्चामाल, भूमि को उपजाउ तथा भूस्खलन से बचाने में वृक्षों की भूमिका को नकारा नही जा सकता है।

आज आवश्यकता है कि हम अपनी परम्पराओं के प्रति निष्ठावान हों । संयम, संतुलन के सहारे पर्यावरण की रक्षा करें। खेतों में विभिन्न प्रकार के रासायनिक अपद्रव्य मलामल आदि जो प्राणियों के लिये नुकसानदायक है ,नदियों मे न जायें। भारतीय जीवन पद्धति में जलाशय, नदी, तालाब, कूप ,झरने आदि के निकट मल –मूत्र विसर्जन करना निषिद्ध रहता है। कम से कम सौ गज दूर करने को कहा गया है। ताकि हवा या वर्षा के कारण यह प्रदूषणकारी द्रव्य जलाशयों मे ना पहुॅच सकें । प्राचीन ऋषि मुनियों की धारणा मानव के हित मे रही है। उनका मानना था , कि मनुष्य अपनी इच्छाओं को वश में रखकर उतना ही प्राप्त करे, जिससे कि प्रकृति की पूर्णता को हानि ना पहुॅचें।

कालिदास, सूरदास, रसखान, तुलसीदास, कबीरदास ने किसी संस्था से शिक्षा प्राप्त नही की उन्होने अपनी रचनाओं में प्रकृति को इस तरह चित्रित किया कि इसके विकास के बारे में सोचा भी नही जा सकता है। कालिदास ने अपनी रचना मेघदूत व अभिज्ञान शाकुन्तलम् में पर्यावरण संरक्षण का वर्णन किया है। सामान्यतः मान्यता है कि विज्ञान जहाँ समाप्त होता है आध्यात्म वहाँ से प्रारम्भ होता है किंतु ऐसा नही है। मध्यकाल तथा मुगल काल तक प्रकृति को संरक्षित करने का विशेष महत्व रहा है।

यदि हम ध्यान से देखे तो विज्ञान और आध्यात्म एक सिक्के के दो पहलू है। विज्ञान की विभिन्न महत्वपूर्ण ज्ञान को जीवन में उतारना भी हमारे दर्शन का मुख्य उद्देश्य रहा है। पर्यावरण और मानव को एक दूसरे के लिये महत्वपूर्ण माना गया है। आज हमारे सामने सबसे बड़ी समस्या प्रदूषण एवं शुद्ध पर्यावरण की उतनी नही है जितनी पश्चिम की भौतिक वादी सभ्यता के फलस्वरूप होने वाले दुष्परिणामों की है, जिन्हें अपनाकर भारतीय मूल्य परंपराओ एवं संस्कृति के मूलभूत आयामो पर चोट पहुंचाई जा रही

विकास के नाम पर मनुष्य की ताबड़ तोड़ यात्रा कहीं भोपाल गैस त्रासदी, कही धरती धसकना, कहीं भूकम्प, अकाल, बाढ़ हमारी किस्मत की रेखा बन चुके है। भारतीय संस्कृति का अनुसरण ही बचाव का एक उपाय है। इसका विनाश जीवन का न्यौता है।

वैश्वीकरण के कारण आज परिधान से लेकर खान–पान ज्ञान से लेकर सम्मान, उत्पादन से लेकर, उपभोग, विकास लेकर विनाश और समझने से लेकर विचारने तक सभी कुछ पश्चिमी तौर तरीकों से ग्रस्त है जिससे भारतीय समाज में परिवर्तन निरन्तर होता जा रहा है। जिसके प्रभाव से हम अपनी भारतीय संस्कृति को भूलते जा रहे हैं। आज के आगे बढने की धुन में संस्कृति का शोषण किया जा रहा है। जिससे पर्यावारण संकट दिन प्रतिदिन बढता जा रहा है। आज वैश्वीकरण, पश्चमीकरण की धुन में मानव तकनीकी के निरन्तर विकास से प्रकृति सर्वाधिक क्षतिग्रस्त हो रही है। आज का मनुष्य इतना स्वार्थी हो गया है कि वह सभी जीव–जन्तुओं व वनस्पतियों को हानि पहुँचा रहा है। दूषित मानसिकता वाले आज के मानव ने पर्यावरण को विकृत करके भारतीय संस्कृति को प्रदूषित किया है ।

निष्कर्ष

वर्तमान समय में पर्यावरण प्रदूषित होता जा रहा है जैसे–जैसे हम अपनी संस्कृति से दूर होते जा रहे हैं। वैसे वैसे पर्यावरण प्रदूषण बढ़ता जा रहा है हमें अपने पर्यावरण को बचाना होगा तथा अपनी भारतीय संस्कृति को बनाए रखने के लिए

हमें अपनी भारतीय संस्कृति को नई पीढ़ी में हस्तान्तरित करना होगा। प्रकृति से हमने जो लिया उसे हजारों हाथों से लौटाना जरूरी है। आज लोगों को स्वयं को इतना सशक्त करना होगा कि वर्तमान परिस्थिति में इन नवआगुन्तकों के बीच रहकर अपने अस्तित्व, अपनी सभ्यता एवं संस्कृति को सहेजते हुए अपना चहुंमुखी विकास कर सके। सरकार की पर्यावरण संरक्षण की नीतियों को सही ढंग से संचालित करने की आवश्यकता है।

सन्दर्भ सूची

1. सिंह, निशान्त, 2002 ''पर्यावरण और जलवायु प्रदूषण'' प्रकाशन सन्मार्ग प्रकाशन दिल्ली, (पृ0—13,179,180,181—182)
2. 10, जुलाई, 2003,https.//.Hindi.speakingtree.in.article.(भारतीय संस्कृति में पर्यावरण संरक्षण)
3. 4, जून, 2018,https.//.www.rajasthanhistory.com (भारतीय संस्कृति में पर्यावरण संरक्षण)
4. 29, अप्रैल, 2016,https.//.Hindi.indiawaterportal.org.(भारतीय संस्कृति में पर्यावरण संरक्षण)
5. मिश्र, नित्यानन्द, एवं पाण्डेय शिवचरण, सन 1998 ''पर्यावरण संस्कृति प्रदूषण एवं संरक्षण'' प्रकाशन श्री अल्मोड़ा बुक डिपो माल रोड अल्मोड़ा 26360 :22
6. उपाध्याय, राखी एवं उपाध्याय सुशील, 2014 ''हिन्दी साहित्य में पर्यावरण चेतना के विविध आयाम'' प्रकाशन मास्टर माइन्ड पब्लिकेशन (प्रा0लि0) पृ0— 110, 36, 37, 38
7. भरतीय चिन्तन परम्परा में जल एवं पर्यावरण संरक्षण की अवधारणा, गणेश कुमार पाठक छठवीं राष्ट्रीय जल संगोष्ठी, 2019, राष्टीय जल विज्ञान संस्थान रूड़की।